नए घर में गड़बड़ी
लेना आस्क
A&A Books

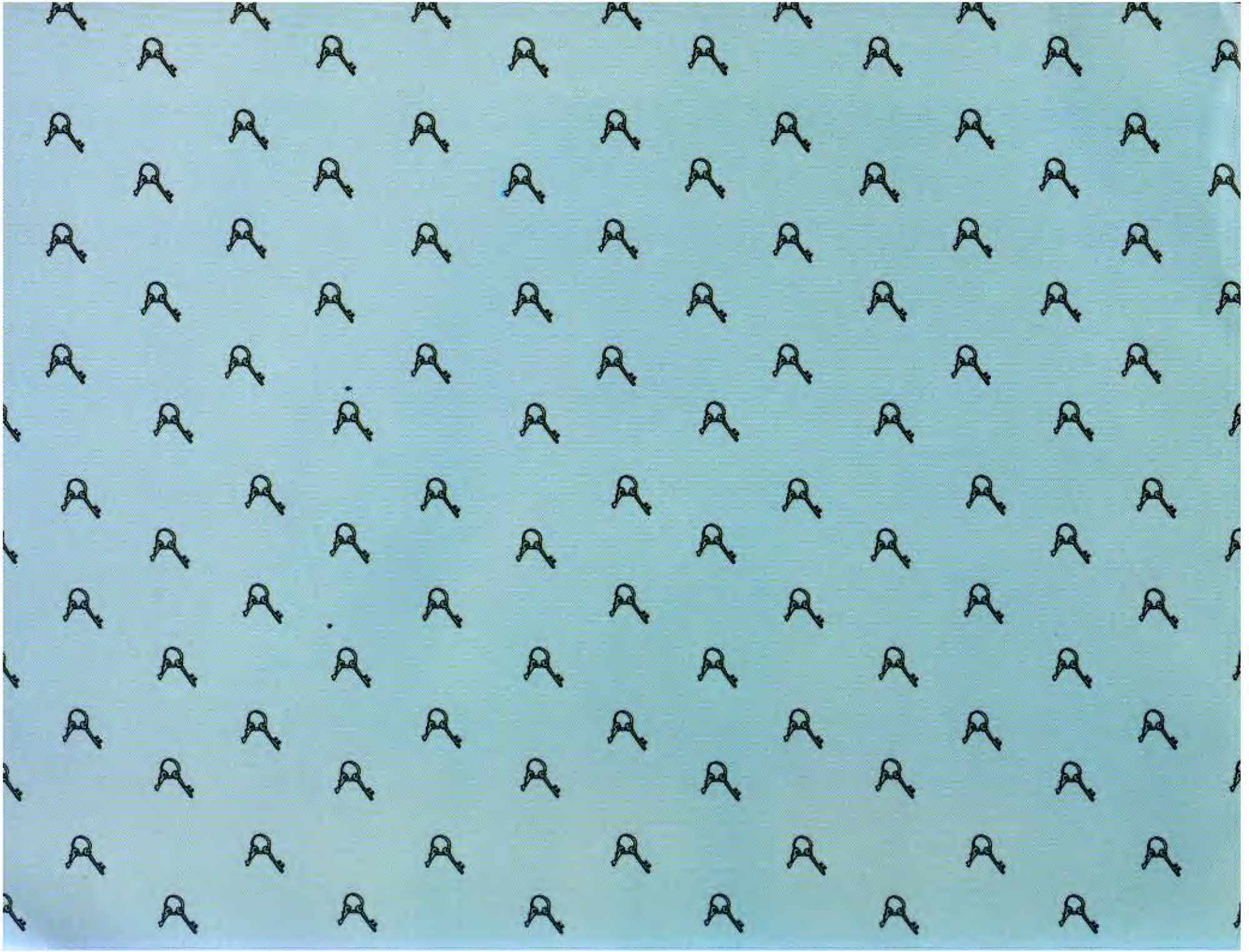

# नए घर में गड़बड़ी

लेना आस्क

अनुवाद : अरुंधती देवस्थले

इंगेर रैंडी रॉग्नॉय

A&A Books

This picture book has been published
with the financial support of NORLA.

FAMILIEN ROTLE FLYTTER by *Av Lene Ask*
First published in Norwegian by Gyldendal Norsk Forlag AS
Postboks 6860 St Olavs Plass, N-0130 Oslo, Norway

© Gyldendal Norsk Forlag AS 2008. [All rights reserved.]
Hindi translation © Arundhati Deosthale, 2010

First Hindi edition 2010

Published by
A&A Books
C1-324, Palam Vihar
Gurgaon 122017, India
aabooktrust@gmail.com

Printed at Vimal Offset, Delhi
vimaloffset@gmail.com

ISBN: 978-93-80141-13-8

यहाँ रहता है
गड़बड़ी परिवार
मंजू

गड़बड़ी परिवार घर बदल रहा है।

सबसे पहले हरेक ने जरूरी चीजें सम्भाल लीं।
सामान बाँधकर ले जाने वाले बाद में आएँगे।

इस परिवार में गड़बड़ तो होती ही रहती है। पर आज एक ऐसी चीज है जो नहीं खोनी चाहिए : वे हैं नए घर की चाबियाँ। पापा ने वे मेज पर रख दी हैं।

संजू अंजू की मदद कर रहा है। वह जिस चीज पर इशारा करती है, संजू बाँध देता है : उसका प्यारा खिलौना, बिस्कुट का पैकेट, बारहसिंगा। अंजू चाबियाँ माँगती है। संजू कहता है, "नहीं, ये खेलने की चीज नहीं, इन्हें मैं माँ के कैमरे के बक्से में रख देता हूँ।"

संजू अपने लिए टार्च, नया खेल, डायनोसौर वाली किताब, दद्दू का दिया तम्बू और जन्मदिन के बचे 5 गुब्बारे सम्भाल लेता है।

माँ के सामान में हैं एक पुरानी बरनी, नीले फूलोंवाला गाऊन और कैमरा जो उनके दफ्तर के काम आता है। वहाँ चाबियाँ देखकर वह कहती है, "वाकई, ये नहीं खोनी चाहिएँ !" वह उन्हें उठाकर किताबों की अलमारी पर रख देती है।

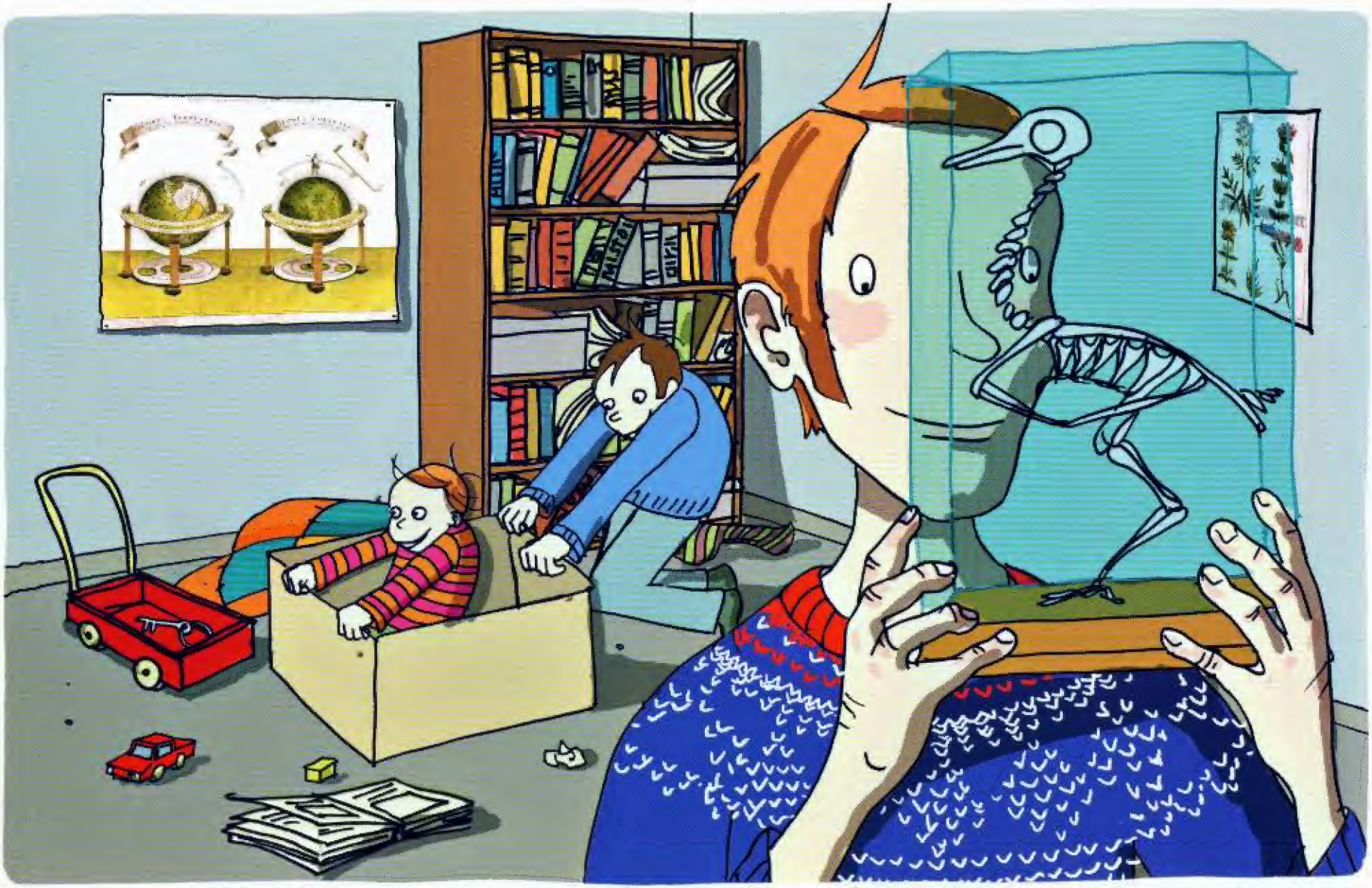

पापा के सामान में हैं - किसी पुराने पक्षी का कंकाल, तैराकी का सामान और दाढ़ी का कढ़ाई वाला चादर। किताबों की अलमारी पर पड़ी चाबियाँ उन्हें नए घर की चाबियों सी लगती हैं। वे तो उन्होंने मेज पर रखी थीं। पापा वे चाबियाँ अंजू की गाड़ी में फेंक देते हैं।

जरूरी सामान बाँधकर, वे माँ के दफ्तर की गाड़ी में रखते हैं।

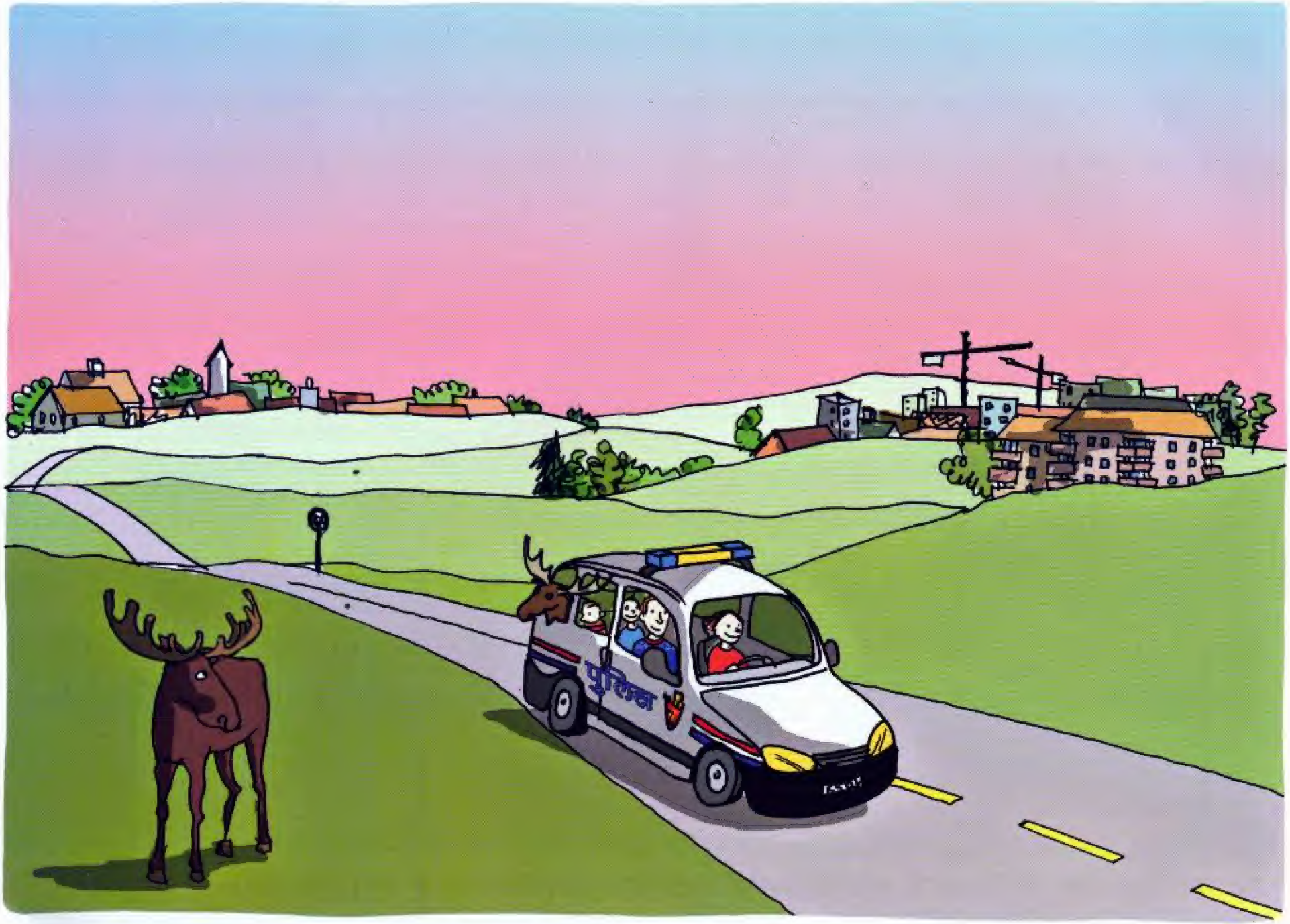
पुलिस

नया घर चौथी मंजिल पर है। वहाँ पहुँचने के लिए कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। ज्यादातर सामान उठाने वाले पापा, सबसे आखिर में पहुँचते हैं।

दरवाजे पर लिखा है : घंटी जोर से बजाएँ। वहाँ अखबार पड़ा है। सामान नीचे रखते ही पापा दंग रह जाते हैं। यहाँ तो कोई और रह रहा है।

वहाँ बैठी माताजी को लगा, पापा से कोई भूल हुई है। वे पिछले 53 साल से वहाँ रह रही हैं और घर बदलने का उनका कोई इरादा भी नहीं है। कभी-कभी, शाम को अन्धेरे में अकेला होने पर, वे घर का दरवाजा खोल लेती हैं। इससे उन्हें अच्छा लगता है। तभी शायद पापा से गलती हुई।

आखिर जब पापा सही दरवाजे पहुँचे तो देखा बाकी सब साथ खड़े उनका इन्तजार कर रहे हैं।
पर चाबियाँ कहाँ हैं?

अंजू शरारत-भरी मुस्कान के साथ अपनी जेब से कुछ निकालती है।

नया घर बड़ा है। मंजू और अंजू को अपना एक कमरा मिला है।
"अब यहाँ कोई गड़बड़ तो हो ही नहीं सकती," पापा कहते हैं।

''चलो, कुछ खाकर सो जाएँ, सामान कल खोलेंगे,'' माँ ने कहा। ''पर सोएँगे कहाँ?'' संजू ने पूछा। किसी को याद ही न रहा कि पलंग या कुर्सियाँ साथ लाएँ। अब क्या करें? ''मैं बताता हूँ!'' पापा कहते हैं।

नीचे जाकर वे माताजी से एक गद्दा ले आते हैं।

जब तक वे लौटते हैं, माँ और संजू ने मिलकर एक तम्बू लगा लिया है। उसके बाहर, बक्सा उलटकर एक मेज बना दी है। माँ का पुराना गाऊन मेजपोश बन गया है। अंजू को अपना बिस्कुटों का पैकट मिल गया है।

खाने के बाद, किताब पढ़कर पापा उन्हें डायनोसौरों के अजीब-से नाम बताते हैं।

अगले दिन बाकी का सामान भी आ जाता है। नए घर में फिर होने लगता है नया गड़बड़-झाला !

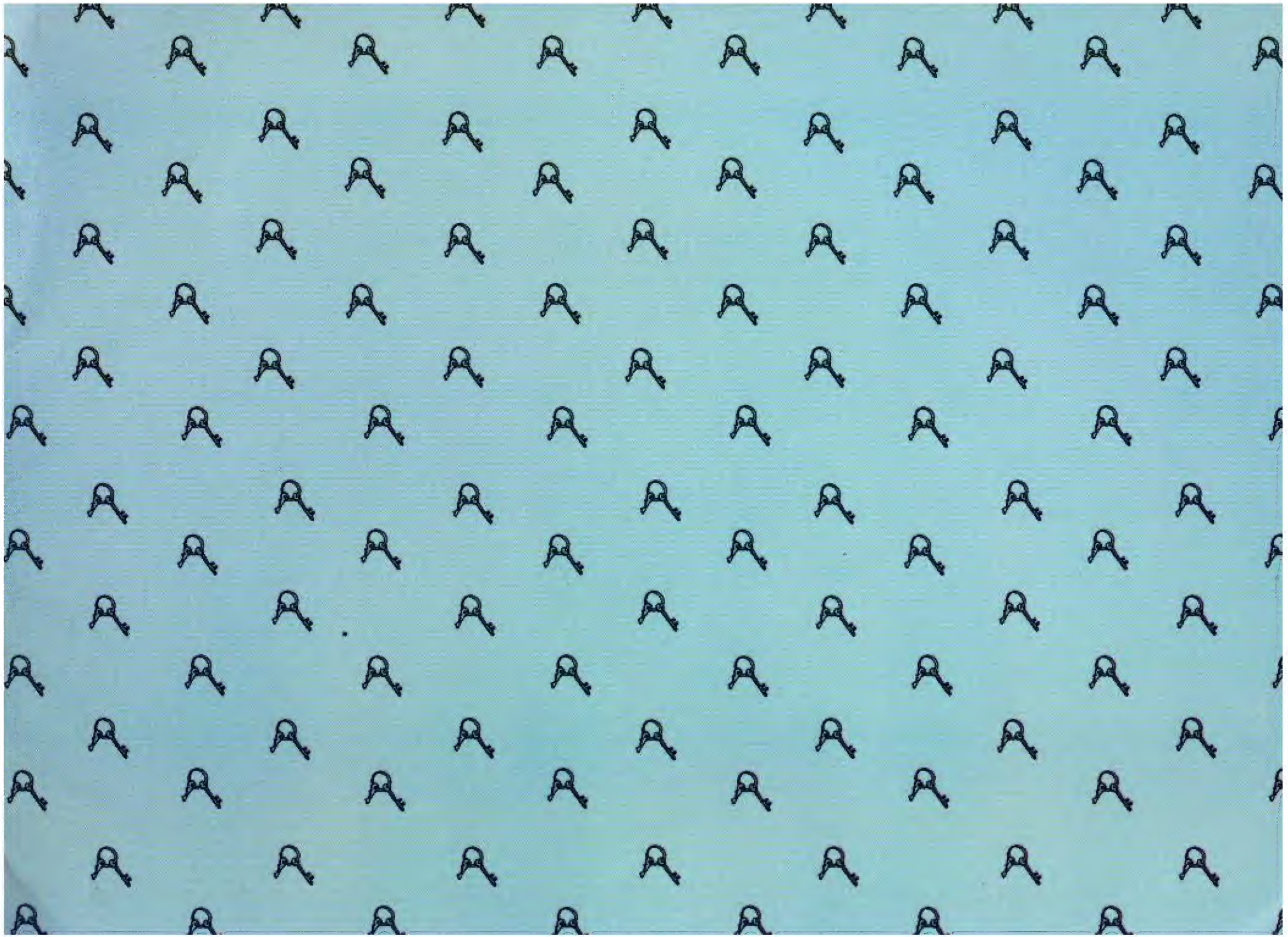

गड़बड़ी परिवार हमेशा अपने नाम पर खरा उतरता है।
उनके घर बदलने पर जो गड़बड़-झाला होता है,
आईए, उसका किस्सा सुनें।
यह मजेदार किताब हम नॉर्वे से लाएँ हैं,
खास आपके लिए!

50 रुपये
ISBN 978-93-80141-13-8
9 789380 141138